Lec- 13

Dr. Parikshit kr. Singh (1)
Dept. of. LSW
SNSRKS college, Saharsa.

सम्प्रेषण की बाधाएँ
(Barriers to Communication)

प्रभावी सम्प्रेषण के मार्ग में प्रायः निम्नलिखित बाधाएँ आती हैं, जिनमें विषय में विशेष सावधानी की आवश्यकता है —

(1) संगठनात्मक संरचना की कठिनाई — किसी भी उपक्रम की संगठनात्मक संरचना में जितने अधिक स्तर होंगे, संवाद को भेजने व समझने में उतनी ही अधिक बाधाएँ होंगी, क्यों कि संदेश को संवाद दाता से उसके प्राप्तकर्ता तक पहुँचाने के लिए उन सभी स्तरों से गुजरना पड़ेगा।

(2) भाषा सम्बन्धी कठिनाई की जटिलता — भाषा के कारण कभी-कभी संवाद को सुनने, समझने व उसके अनुसार काम करना कठिन हो जाता है। भाषा सम्बन्धी बाधाएँ निम्न कारणों से हो सकती हैं —(i) भाषा की विभिन्नता, (ii) क्लिष्टता (iii) दोषपूर्ण अनुवाद, (iv) गलत शब्दों का चयन, (v) विशिष्ट शब्दों की चिन्ता।

(3) उद्देश्यों की बाधा — कभी-कभी सम्प्रेषण का वास्तविक उद्देश्य प्रकट उद्देश्य से भिन्न होता है, परिणामतः सम्प्रेषण से इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पाती।

(4) स्थिति एवं पद के कारण पक्षपात — कभी-कभी व्यक्ति की स्थिति एवं पद के कारण ऊपर से नीचे के ओर दोनों

के सम्प्रेषण पक्षपातपूर्ण हो जाते हैं।

(5) समयाभाव की कठिनाई — कभी-कभी संवादकर्ता संवाद के समयाभाव के कारण यथा-संभव संवाद प्राप्तकर्ता को प्रेषित नहीं कर पाते और परिणामतः संवाद अभाव हीन हो जाता है।

(6) ध्यान से व विवेक से न सुनना — सम्प्रेषण में श्रवण सबसे उपेक्षित तत्व है। अर्द्ध-श्रवण के कारण सम्प्रेषण संवाद को समझने व क्रियान्वयन में कठिनाई होती है।

(7) भौगोलिक दूरी — दूर स्थित क्षेत्रों में संवाद भेजना प्रायः कठिन हो जाता है। यद्यपि आधुनिक युग में टेलीफोन व टेलीविजन जैसे साधन उपलब्ध हो गए हैं किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों व अनेक छोटे नगरों में उनका आज भी अभाव है।

(8) भावनात्मक धारणाएँ — शारीरिक बनावट, आचरण, खान-पान, वेश-भूषा आदि में अन्तर हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप संवाद को समझने व उसके अनुरूप काम करने में कठिनाई पैदा हो सकती है।

(9) पदोन्नति की भावना - अधीनस्थों की पदोन्नति की भावना उच्च अधिकारियों तक पूर्ण एवं सही सूचनाओं के सम्प्रेषण में बाधक सिद्ध हुई है, क्यों कि वे केवल हाँ में हाँ मिलाते हैं एवं सही बात नहीं कहते।

(10) बुरे मानवीय सम्बन्ध — अधिकारियों एवं कर्मचारियों

के मध्य अच्छे सम्बन्धों के अभाव में भी सम्प्रेषण कुप्रभावित होता है। अनेक अधीनस्थ अपने बॉस की बात सुनना भी पसंद नहीं करते। फलतः सम्प्रेषण का उद्देश्य प्राप्त नहीं हो पाता।

(11) भ्रम— भ्रम सम्प्रेषण का सबसे बड़ा शत्रु है। भ्रम के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

(12) तकनीकी बाधाएं— संचार की तकनीकी बाधाएँ संचार साधनों में अभियान्त्रिकी दोषों, गलत माध्यमों के चयन अथवा प्रयोग तथा संचार यन्त्रों के गलत ढंग से प्रयोग करने के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं।

(13) वैयक्तिक भिन्नता सम्बन्धी बाधाएं— वैयक्तिक भिन्नता सम्प्रेषण में बाधाएँ खड़ी करते हैं। वैयक्तिक भिन्नता निम्न रूप में हो सकता है:—

(i) प्रेषक एवं प्रेषित की आयु में अन्तर, (ii) देखने, सुनने, समझने, अनुभव करने आदि में अन्तर (iii) पुस्तकों एवं क्रियाओं को ग्रहण क्षमता में अन्तर, (iv) सैद्धान्तिक अन्तर (v) आर्थिक स्थिति में असमानता, (vi) व्यक्तियों के स्वभाव, भाषा में अन्तर (vii) धार्मिक मतभेद होना, (viii) वैचारिक मतभेद इत्यादि।

(14) प्रबन्धकीय बाधाएँ— प्रत्येक अकुशल एवं अवैज्ञानिक प्रबन्ध व्यवस्था के कारण भी संचार के मार्ग में बाधाएं पैदा हो जाती हैं। इसके तीन कारण हो सकते हैं—(i) अधिनायकवादी प्रबन्ध (ii) पूर्ण संचार का अभाव तथा (iii) निर्देशन का अभाव

—

Scanned with CamScanner